अगस्त्येश्वर महादेव (१/८४) उज्जैन



स्थान: माँ हरसिद्धि शक्तिपीठ के पीछे स्थित संतोषी माता मंदिर परिसर में

पूजन का विशेष समय: अगस्त्योदय काल, सोमवार, अष्टमी, चतुर्दशी

विशेष फल: सभी पापों का नाश, मोक्षलाभ, सौ राजसूय यज्ञ के समान पुण्य, मातृकुल तथा पितृकुल का उद्धार, परमपद की प्राप्ति

उज्जैन में भुक्ति-मुक्ति प्रदान करने वाले 84 सिद्धलिंग हैं जो सर्वपापहारी हैं जिनको चौरासी महादेव कहते हैं।
इन सब लिङ्गों में प्रथम हैं अगस्त्येश्वर महादेव "प्रथममगस्त्येश्वरमुत्तमम्"
जिनके दर्शन मात्र से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है "यस्य दर्शनमात्रेण कृतकृत्यो नरो भवेत्"

अगस्त्येश्वर महादेव प्रादुर्भाव कथा

स्कन्दपुराण अवन्तीखण्ड अवन्तीस्थचतुरशीतिलिङ्गमाहात्म्य अध्याय ०१

।। उमोवाच ।।
अगस्त्येश्वरनामेह कथं लब्धमनेन वै। कस्मिन्स्थाने कथं जातं विस्तराद्वक्तुमर्हसि ।।
उमा कहती हैं - हे देव! इस लिंग का नाम अगस्त्येश्वर कैसे पड़ा? यह कहां किस प्रकार से प्रादुर्भूत हुआ? यह सब कृपया कहिए।

।। हर उवाच ।।
शृणु देवि महाभागे कथामस्य पुरातनीम् । सर्वपापप्रशमनीं समीहितफलप्रदाम्।।
पुराऽसुरैर्जिता देवा निरुत्साहाश्च ते ततः। भागाश्चैषां हृताः सर्वे निराशाः पितरः कृता ।
भ्रष्टैश्वर्य्यास्तदा देवि चेरुर्देवा महीतले ।।
ततः कदाचित्ते दीना दीप्तमादित्यवर्चसम्। ददृशुस्तेजसायुक्तमगस्त्यं विपुलव्रतम् ।।
अभिवाद्य ततो देवा दृष्ट्वा तं तेजसा वृतम् । इदमूचुर्महात्मानमगस्त्यं लोकविश्रुतम् ।।
दानवैर्निर्जिता युद्धे सर्वे स्वर्गाच्च पातिताः । ततस्त्वं नो भयात्तीव्रात्त्रायस्व मुनिपुंगव ।।

भगवान हर कहते हैं - हे देवी, महाभागे! यह पुरातनी कथा श्रवण करो। यह सभी पापों का नाश करने वाली तथा समिहित फलप्रदा है। पूर्व में देवता जब असुरों से परास्त हो गए तब वे पूर्णतः निरुत्साह थे। उनका यज्ञभाग अपहृत हो गया तथा इसलिए वे सभी निरूपाय से हो गए! हे देवी! वे सब ऐश्वर्यहीन होकर पृथ्वी पर विचरण कर रहे थे तभी विचरण करते करते दीनभावपन्न स्थिति में दीप्त सूर्यसमप्रभ ब्रह्मचारी अगस्त को उन लोगों ने देखा। उनका दर्शन करने मात्र से उन्होंने महर्षि का अभिवादन करके उनसे कहा - हम दानवों द्वारा जीते जाकर स्वर्ग भ्रष्ट होकर पृथ्वी पर मरणधर्मा मनुष्यों की तरह विचरण कर रहे हैं। हे मुनिपुंगव! आप इस तीव्र भय से हमारी रक्षा करें।

इत्युक्तः स तदा देवैरगस्त्यः कुपितोऽभवत् । प्रजज्वाल च तेजस्वी कालाग्निरिव संक्षये ।।
तदा दीप्तांशुजालेन निर्दग्धा दानवास्तथा । अंतरिक्षान्महादेवि पतिताश्च सहस्रशः ।।
दह्यमानास्ततो दैत्या स्तस्यागस्त्यस्य तेजसा । ऋषेश्च दानवाः सर्वे पातालं वव्रजुर्भयात् ।।
ततो ऽगस्त्यो महात्मा वै तान्हत्वा शोकमूर्छितः । बभूवातिशयं चासौ चिंतयोद्विग्नमानसः ।।
कृतं घोरं महत्पापं हता यद्दानवा मया । अहिंसा परमो धर्मो मनुना कथ्यते यतः । किं करोमि क्व गच्छामि कथं शुध्येय चाप्यहम् ।।
एवं चिंतयतस्तस्य समागच्छत्पितामहः । प्रोवाच स मुनिं तत्र कस्मात्त्वं शोकविह्वलः ।।

देवताओं का वाक्य सुनकर भगवान अगस्त्य दैत्यों के प्रति कुपित होकर प्रलयाग्निवत प्रज्वलित हो उठे। उनके दीप्तांशुजाल से दग्ध होकर दैत्य अंतरिक्ष से गिर पड़े। वे मुनि के तीव्र तेज से दग्ध होकर भय पूर्वक पाताल में प्रविष्ट हो गए। तदन्तर महात्मा अगस्त्य दैत्यों का वध करके शोक मूर्छित तथा चिंतित हो उठे। उन्होंने विचार किया कि मैंने दैत्यों का वध करके महापाप किया है। भगवान मनु ने अहिंसा को परम धर्म कहा है। अब क्या करूं? कहां जाऊं? किस प्रकार मेरी शुद्धि हो? जब वे इसी प्रकार चिंतित थे उसी बीच पितामह ब्रह्मा ने उनके पास आकर कहा - हे मुनिशार्दुल! तुम क्यों शोक विह्वल हो? शीघ्र इसका कारण कहो।

लक्ष्यसे मुनिशार्दूल कारणं कथ्यतां त्वरम् । स ब्रह्माणं नमस्कृत्य कथयामास पृच्छतः ।।
देवदेव जगन्नाथ दाहोंतर्मानसं मम । ब्रह्महत्या समायाता यन्मया दानवा हताः ।।
ममोपायं समाचक्ष्व प्रसादत्सुरसत्तम । बहुकालार्जितं देव गतं मे संक्षयं तपः ।।

मुनि अगस्त्य ने प्रणाम करके कहा - हे देवदेव! भगवान! जगन्नाथ! मेरा हृदय सतत दग्ध हो रहा है। मुझे ब्रह्महत्या लगी है। मैंने दैत्यों का वध किया है। हे सुरश्रेष्ठ! आप मेरी पापमुक्ति का उपाय कहिए। मेरा दीर्घकालीन तप पुण्य नष्ट हो गया।

प्रोवाचेदं सुरश्रेष्ठः शृणु त्वं यत्नतः परम्। उपायं सर्वपापस्य क्षयो येन भवेद्ध्रुवम्।।
महाकालवने दिव्ये यक्षगंधर्वसेविते। उत्तरे वटयक्षिण्या यत्तल्लिंगमनुत्तमम्।।
पिशाचस्यापि तीर्थस्य भागे दक्षिणतः स्थितम् । तं समाराध्यतः सर्वं पापं नाशमवाप्नुयात् ।।
आराधय शुभं लिंगं सर्वपापप्रणा शनम् । बाढं प्रोवाच धर्मात्मा महाकालवनं ययौ ।।
तस्मिन्स लिंगे देवेशि समाराधनतत्परः । बभूवाहर्निशं भक्त्या तद्ध्यानैकरतो मुनिः ।।
अहं तुष्टस्तदा देवि मुनेस्तस्य महात्मनः ।।

प्रोक्तं मया महाभाग मुने शृणु समाहितः । वरं वरय विप्रेंद्र यत्ते मनसि वर्त्तते ।।
तुष्टोऽहमनया भक्त्या तपसा दुष्करेण तु । लिंगस्यास्य प्रभावेण जातस्त्वं निर्मलोऽधुना ।।
प्रणष्टा ब्रह्महत्या ते दानवोत्था मुनीश्वर । मदीयं वचनं श्रुत्वा तेनोक्तं वरवर्णिनि ।।

महामुनि अगस्त्य का कथन सुनकर सुरप्रवर ब्रह्मदेव ने कहा - जिससे तुम्हारे सभी पाप का क्षय हो सके उस उपाय को सुनो। यक्ष-गंधर्व सेवित दिव्य महाकाल वन में पिशाचतीर्थ के दक्षिण में तथा वटयक्षिणी के उत्तर में जो अति उत्तम लिंग विराजमान है तुम उनकी वहां आराधना करो। इससे तुम्हारा सभी पाप नष्ट होगा। तुम वहां जाकर पापनाशक उस शुभ लिंग की आराधना करो। यह कथन सुनकर महामुनि अगस्त्य ने "अच्छा" कहा और तत्काल महाकालवन पहुंचे। वहां पर वह भक्ति के साथ अनन्य चित्त होकर अहर्निश पूर्वोक्त लिंग आराधन करने लगे। हे देवी! इससे मैं प्रसन्न हो गया तथा अगस्त्य से कहा - हे महाभाग मुनिवर! समाहित चित्त से सुनो। तुम्हारी जो इच्छा हो वह वर मांगो। मैं तुम्हारी भक्ति तथा दुष्कर तपस्या से प्रसन्न हो गया। इस लिंग के प्रभाव से तुम निष्पाप हो गए। तुम दानववधजनित ब्रह्महत्या द्वारा मुक्त कर दिए गए। हे वर्णवर्णिनी पार्वती! मेरा यह वाक्य सुनकर मुनि कहने लगे -

यदि देव प्रसन्नस्त्वं शरणागतवत्सलः ।। त्वदंघ्रियुगले भूयान्मम भक्तिर्महेश्वर ।।
तपस्यथ तथा धर्मे न मे विघ्नो भवेदिति । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कुंभयोनेर्महात्मनः । मया प्रोक्तं विशालाक्षि मुने एवं भविष्यति ।।
यस्त्वया पूजितो देवो ब्रह्महत्याविनाशनः । त्वन्नाम्ना त्रिषु लोकेषु सोऽहं ख्यातो भविष्यति ।।

हे शरणागतवत्सल! यदि आप मुझ पर प्रसन्न है तब आपके चरणयुगल के प्रति मेरी भक्ति बनी रहे तथा मेरा मन कभी तथा तथा धर्म से च्युत न हो यह वर दीजिए। हे विशालाक्षी मैंने कुंभयोनि अगस्त्य का वचन सुनकर उनसे कहा ऐसा ही हो। तुमने जिस ब्रह्महत्यानाशक देव की पूजा किया है वह तुम्हारे ही नाम से त्रिलोक के में प्रसिद्ध होगा।

अगस्त्येश्वरदेवोपि विख्यातो भुवनत्रये । एवमुक्तो मया देवि स विप्रस्तत्र संस्थितः । कृपया तस्य लिंगस्य पंचमुद्राविभूषितः ।।
ये नरास्तन्महालिंगं निरीक्षिष्यंति भक्तितः । सर्वपापविनिर्मुक्ताः सर्वकामैरलंकृताः।।
भविष्यंति महात्मानः पुत्रैश्वर्यसमन्विताः । अंतकाले च मां यांति विमानैः सर्वकामदैः ।।
स्तुता गंधर्वमुख्यैश्च रुद्रलोके च शाश्वते । येऽर्चयंति सदा देवमगस्त्वेश्वरसंज्ञकम्।।
कृतपुण्या नरा मर्त्यास्ते यांति परमं पदम् । संस्मृते देवदे वेशे नराणां कोटिजन्मजम्।।
अशुभं क्षयमाप्नोति कस्तं न प्रणमेच्छिवम्। यः प्रणम्य नरो भक्त्या देवं तं च निषेवते।।
मुच्यते ब्रह्महत्यादिपा तकैर्नरकप्रदैः ।।

इस प्रकार वह लिंग अगस्त्येश्वर नाम से प्रख्यात होगा। हे देवी! मेरे यह कहने पर वह विप्र अगस्त्य इस लिंग की कृपा से पंचमुद्रा विभूषित होकर यही रहने लगे। हे देवी! इस महालिंग का जो भक्ति भाव से दर्शन करते हैं वे सर्वपापरहित हो पुत्र ऐश्वर्य संपन्न होते हैं तथा अंत काल में सर्व कामप्रद विमान द्वारा मेरे लोक जाते हैं तथा शाश्वत रूद्रलोक जाकर प्रमुख गंधर्वगण द्वारा स्तुति होते हैं। जो नित्य

अगस्त्यदेव की अर्चना करते हैं वे सभी लोक में पूज्य होकर परम पद प्राप्त करते हैं। इस लिंग का मात्र स्मरण करने से ही मनुष्य का करोड़ों जन्म का अर्जित पातक तथा अशुभ नष्ट हो जाता है। अतः कौन व्यक्ति इस लिंग को प्रणाम नहीं करेगा? जो नर भक्ति भाव से इस लिंग को प्रणाम करता है तथा सेवा करता है वह नरकप्रद ब्रह्महत्यादि पाप समूहों से मुक्त हो जाता है।

राजसूयशतेनैव यत्पुण्यं च भविष्यति । तत्पुण्यमधिकं देवि दर्शनाच्च भविष्यति ।।
किं तीर्थैर्विविधैः स्नानैः किं दानैर्विविधैः कृतैः । ते प्राप्स्यंति फलं सर्वे मत्प्रसादान्न संशयः ।।
अष्टम्यां च चतुर्द्दश्यां दिने सोमस्य शक्तितः । यः करिष्यति लिंगस्य पूजा भक्तिसमन्वितः ।
कुलानां तारयत्येव मातृकं पितृकं शतम् ।।
ये च पश्यंति पुरुषा भावहीनाः प्रसंगतः । न ते पश्यंति संसारे नरकं वै कदा चन ।।
एतत्ते कथितं देवि लिंगमहात्म्यमुत्तमम् । प्रथमं कथितं लोके द्वितीयं शृणु यत्नतः।।

हे देवी! सौ राजसूय यज्ञ करने का जो फल है उस पुण्य से अधिक फल इस लिंग दर्शन से प्राप्त होता है। नाना तीर्थ में स्नान तथा विविध दान की क्या आवश्यकता? मानव मेरी कृपा से यहीं उस स्नान दान आदि कर्म जनित फललाभ कर लेते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। सोमवार अष्टमी तथा चतुर्दशी के दिन जो मनुष्य भक्ति के साथ लिंगार्चन करता है, वह अपने मातृकुल तथा पितृकुल का उद्धारक हो जाता है। जो व्यक्ति भक्तिहीन हो कर भी प्रसंगतः अगस्त्येश्वर का दर्शन कर लेते हैं, वे कदापि नरक दर्शन नहीं करते। हे देवी! मैंने इस प्रकार तुमसे इस लिंग का माहात्म्य कहा।

अगस्त्य उदय काल में अगस्त्येश्वर महादेव का माहात्म्य

स्कन्दपुराण अवन्तीखण्ड अवन्तीक्षेत्रमाहात्म्य अध्याय ३५

यस्त्वगस्त्वेश्वरं गच्छेदेकचित्तो नरो मुने ।।
दृष्ट्वागस्त्येश्वरं देवं सोपवासो जितेंद्रियः । अगस्त्योदयवेलायां मुच्यते सर्वपातकैः ।।
कृत्वागस्त्यं च सौवर्णं रौप्यं वाथ स्वशक्तितः । पञ्चरत्नसमायुक्तं वस्त्रेण च समन्वितम् ।।
तत्कालीनैः फलैः पुष्पैः पूजनीयो विधानतः । विधानं तस्य वक्ष्यामि चातुर्वर्ण्ये द्विजोत्तम ।।

जो अगस्त्येश्वर जाकर उपवासी तथा जितेंद्रिय होकर अगस्त्य उदय काल में वहां दर्शन करता है वह सर्व पाप विनिर्मुक्त होकर अंत में मोक्ष लाभ करता है। वहां अपनी वित्त शक्ति के अनुरूप सोने व चांदी से अगस्त मूर्ति निर्माण करके उनको पंचरत्नयुक्त तथा वस्त्रों से आवृत करके उस समय के ऋतुपुष्प तथा फल से पूजित करें। यह पूजा सविधि करनी चाहिए। हे द्विजप्रवर! अब इस पूजा का विधान सुनें।

सप्तधान्यानि मुख्यानि तावन्त्येव फलानि च । एकं धान्यं फलं चैकमग्रे त्याज्यं भवेन्मुने ।।
यावद्वै सप्त वर्षाणि व्रतमेवं समाचरेत् ।।

यह पूजा चातुर्वर्ण क्रमेण कहता हूं। इस कर्म में सप्तधान्य तथा सप्तफल मुख्य हैं। हे मुनिवर इस धान्य तथा फल में से प्रतिवर्ष एक एक का उपयोग व्रती छोड़ता जाये। इस क्रम से 7 वर्ष तक व्रताचरण का विधान है।

।। अर्घ्यमन्त्रः ।।
काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसं भव । मित्रावरुणयोः पुत्र कुम्भयोने नमोऽस्तु ते ।।

अर्घ्यमंत्र - “हे काशपुष्प के समान, अग्नि तथा वायु से उत्पन्न, मित्रावरुणपुत्र, कुंभयोनि! आपको प्रणाम!"

दत्तेऽर्घे यत्फलं व्यास तद्वै ह्येकमनाः शृणु । पुत्रवान्धनवांश्चैव जायते नात्र संशयः ।।
मृतः स्वर्गमवाप्नोति संपन्ने जायतेकुले । मर्त्यलोकं पुनः प्राप्य महायोगीश्वरो भवेत् ।।
यश्चैतच्छृणुयान्नित्यं पठेद्वा सुसमाहितः। सर्वपापविनिर्मुक्तो मुनिलोके स मोदते ।।

हे व्यास! अर्घ्य देने का जो फल है वह एकाग्रता से सुनें। अर्घ्यप्रदाता मनुष्य पुत्रवान, धनवान होकर जीवन समाप्त होने के समय स्वर्ग जाता है। तदन्तर उत्तम कुल में जन्म लेकर मर्त्यलोक में महायोगीश्वर होता है। जो व्यक्ति समाहित चित्त से यह नित्य पढ़ता तथा पाठ करता है वह सर्वपापरहित होकर मुनिलोग में आमोदित होता है।

मत्स्यपुराण तथा स्कंदपुराण रेवाखण्ड में एक अन्य अगस्त्येश्वर शिवलिङ्ग का वर्णन मिलता है जहाँ कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी में घृत स्नान पूजा का विशेष महत्त्व है। वह शिवलिङ्ग और चौरासी महादेव में प्रथम अगस्त्येश्वर दोनों भिन्न हैं। इसी प्रकार काशीखण्ड में भी एक अन्य अगस्त्येश्वर का वर्णन है। दक्षिण भारत में कई अगस्त्येश्वर शिवलिङ्ग देखने को मिलते हैं। पाठकों को कोई भ्रम न हो अतः यह चर्चा यहाँ की गई है।

स्रोत: मूल - sa.wikisource.org, हिन्दी अनुवाद - एस एन खण्डेलवाल चौखम्बा संस्कृत सीरीज

॥ अगस्त्याष्टकम् ॥

अद्य मे सफलं जन्म चाद्य मे सफलं तपः ।
अद्य मे सफलं ज्ञानं शम्भो त्वत्पाददर्शनात् ॥१॥

कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं महेश्वर ।
अद्य ते पादपद्मस्य दर्शनात्भक्तवत्सल ॥२॥

शिवश्शम्भुः शिवश्शम्भुः शिवश्शम्भुः शिवश्शिवः ।
इति व्याहरतो नित्यं दिनान्यायान्तु यान्तु मे ॥३॥

शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिश्शिवे भक्तिर्भवेभवे ।
सदा भूयात् सदा भूयात्सदा भूयात्सुनिश्चला ॥४॥

आजन्म मरणं यस्य महादेवान्यदैवतम् ।
माजनिष्यत मद्वंशे जातो वा द्राग्विपद्यताम् ॥५॥

जातस्य जायमानस्य गर्भस्थस्याऽपि देहिनः ।
माभून्मम कुले जन्म यस्य शम्भुर्न-दैवतम् ॥६॥

वयं धन्या वयं धन्या वयं धन्या जगत्त्रये ।
आदिदेवो महादेवो यदस्मत्कुलदैवतम् ॥७॥

हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ ।
शिवशङ्कर सर्वात्मन्नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते ॥८॥

अगस्त्याष्टकमेतत्तु यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥९॥

॥ इत्यगस्त्याष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीअगस्त्येशलिङ्गाष्टकम् ॥

श्रीमत्पर्वतपुत्रिकाश्रितलसद्वामाङ्गमिन्दूज्ज्वल-
त्कोटीरं कनकाद्रिकार्मुकधरं कल्पद्रुमालावली-
सक्तोरःस्थलमन्तकान्तकमनन्ताहीन्द्रसद्भूषणं
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे ॥१॥

भक्ताभीष्टफलप्रदं भवहरं पापौघविच्छेदनं
शक्राद्यष्टदिगीशसन्नुतपदं शुम्भद्गणाधीश्वरम्
।
गङ्गोत्तुङ्गतरङ्गिणीयुतजटाजूटं मुनीन्द्रार्चितं
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे
॥२॥

मार्कण्डेयमुनीन्द्ररक्षणमजं मृत्युञ्जयं शाश्वतं
मत्तामर्त्यविरोधिगर्वनगरीदम्भोलिधारायितम् ।
वित्ताधीशसखं वियत्तललसत्केशं त्रिलोकेश्वरं
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे
॥३॥

भूम्यापोऽग्निसमीरणाम्बरलसत्सोमार्कयज्वाभिधै-
रष्टैरिष्टवरप्रदानचतुरैः स्पष्टैः स्वरूपैः सदा ।
भास्वन्तं जगतीतले गजहरं कर्पूरगौरं शिवं
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे
॥४॥

सूर्याग्नीन्दुविलोचनं सुरवरं फालाग्निभस्मीकृत-
प्रद्युम्नं परमेश्वरं गुरुवरं कालाग्निरुद्रं हरम् ।
कण्ठाकल्पविलासभासुरमहाहालाहलं शङ्करं
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे
॥५॥

श्रीमद्भूमिरथं विरिञ्चिविलसत्सूतं नगाधीशस-
च्चापं विष्णुशरं रथाङ्गयुगलीभूतार्कचन्द्रं शिवम् ।
पूर्वामर्त्यपुरत्रयान्तकरणोद्युक्तं शिवालिङ्गितं
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे
॥६॥

दक्षाक्षुद्रमखागतामरगणान् तत्रत्यऋत्विग्वरान्

चन्द्रं तच्छ्वशुरं भगं मुनिगणानग्निं च दक्षं लसत्
।
स्वेदोद्भूतविनीलदेहरुचिना वीरेण सन्त्रासितं(त्रासकं)
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे
॥७॥

श्रीलक्ष्मीशविरिञ्चिपूजितपदं शुम्भत्त्रिशूलायुधं
श्रीमद्भृङ्गिकुमारनन्दिगणपश्रीवीरभद्रादिभिः ।
सर्वैर्भक्तियुतैर्महागणवरैः संसेव्यमानं सदा
श्रीगुण्टूरिपुराधिवासमतुलागस्त्येशलिङ्गं भजे
॥८॥

श्रीकोप्पराजकुलवार्धिनिशाकरेण
स्तोत्रं कृतं जगति सुब्बयनामभाजा-
गस्त्येश्वरस्य निजभक्तजनावनस्य
यो वै पठेल्लभति सोऽपि सदा विमुक्तिम् ॥९॥

॥ इति श्रीअगस्त्येशलिङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥